संस्कारित समाज

विकसित राष्ट्र

संस्कृति संज्ञान

SANSKRITI SANGYAN

Regd. No. 2214/4/4503

128A, Pocket F, Mayur Vihar,
Phase 2, Delhi-110091
+91-9811300176
sanskritisangyan@gmail.com

संस्कृति संज्ञान संस्था की स्थापना समाज के कुछ संस्कारी एवं राष्ट्रवादी लोगों द्वारा की गई है। इसका उद्देश्य भारतीय समाज को संस्कारित एवं भारतवर्ष को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। यह महसूस किया गया है कि पिछले कुछ दशकों से भारतीय समाज अपने मूलभूत संस्कारों एवं संस्कृति से दूर हो रहा है। संस्कार एवं संस्कृति मनुष्य को अपने समाज और राष्ट्र से जोड़ते हैं और तभी राष्ट्र का एकीकरण संभव है। संस्कारित समाज ही राष्ट्रवादी भावना को जागृत करता है एवं राष्ट्रवादी समाज ही किसी देश को विकसित राष्ट्र बनाकर सुख समृद्धि एवं शांति प्रदान करता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संस्था निम्न बिंदुओं पर काम करेगी।

1. भारतवर्ष के नागरिकों में देश की संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों, रीति रिवाजों, राष्ट्रहित एवं राष्ट्र प्रेम के बारे में न केवल जागृत करना वरन उनके मन मानस में इस भावना को सुदृढ़ करना है।
2. देश के बुद्धिजीवी, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं, स्कूल, विद्यालय, विश्वविद्यालय, समाज के अन्य वर्ग इत्यादि के लिए सेमिनार, गोष्ठी, सार्वजनिक व्याख्यान इत्यादि का आयोजन करना।
3. संस्था के उद्देश्यों का प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, सोशल एवं अन्य मीडिया के द्वारा प्रचार प्रसार करना।
4. समाज के विभिन्न वर्गों जैसे राजनीतिज्ञ, अफसरशाह, डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, पत्रकार इत्यादि को संस्था एवं उसके उद्देश्यों के साथ जोड़ना।
5. देश के जाने-माने लेखकों, पत्रकारों, साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों इत्यादि से इस विषय के विभिन्न पहलुओं पर लिखे लेखों को संग्रहीत कर स्मारिका का निरंतर प्रकाशन करना तथा उसका वितरण समाज के विभिन्न वर्गों में करना।
6. संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना करना।

वर्तमान में संस्था द्वारा एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है। इसके लिए निम्न विषयों का चयन किया गया है।

1. संस्कार एवं संस्कृति
2. वर्तमान शिक्षाः दशा और दिशा
3. प्रदूषणः सामाजिक और मानसिक पक्ष
4. नये भारत में अर्थ-अर्जन की शुचिता
5. अत्याधुनिक तकनीक और सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन
6. वर्तमान में धर्म और अध्यात्म की स्थिति
7. आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद
8. कैसे हो मानव का भारतीयकरण
9. स्वावलंबन, स्वाभिमान और विकास के अंतर-संबंध
10. नैतिक बल, संसाधन और भ्रष्टाचार
11. राजनीति और राष्ट्रवाद
12. नवाचार में संस्कृत साहित्य की भूमिका
13. आधुनिक जीवन में रिश्ते

इन विषयों पर देश भर में सेमिनार, गोष्ठी, बैठके, कार्यशाला इत्यादि आयोजित किए जाएंगे और इसमें समाज के हर वर्ग को शामिल किया जाएगा। देशभर के स्कूल, विद्यालय, विश्वविद्यालय, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं, गांव, झुग्गी-झोपड़ी इत्यादि सभी में इन विषयों पर व्यापक चर्चा की जाएगी, जिससे कि लोगों में राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता एवं रीति-रिवाजों को समाहित किया जा सके।

हमारे संस्कार

व्यक्तिगत स्तर

- सूर्योदय से पहले उठना तथा माता-पिता, गुरु, इष्टदेव को मानसिक प्रणाम कर दिनचर्या आरंभ करना।
- स्नान के बाद प्रतिदिन सूर्य भगवान को जल चढ़ाकर प्रार्थना करना।
- सार्वजनिक स्थानों, घर व व्यक्तिगत साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना।
- प्रतिदिन व्यायाम व शारीरिक श्रम अवश्य करना तथा शरीर की आवश्यकतानुसार सात्विक आहार ग्रहण करना।
- नशीले पदार्थों के सेवन से पूरी तरह बचना तथा कुसंगति से दूर रहने का हर संभव प्रयास करना।
- किसी काम को छोटा या हीन न समझना तथा अपना नियत कार्य निष्ठा एवं श्रद्धापूर्वक करना।
- सबमें परमात्मा का अंश है, अतः किसी भी मनुष्य को छोटा या हीन न समझना।
- सादगी, मितव्ययिता एवं संयमित जीवन जीने का प्रयास करना तथा पड़ोसियों के सुख-दुख में भाग लेना।
- सद्विचार, सद्वचन एवं सत्कर्म को सम्मान देना तथा सत्य के समर्थन में कष्ट सहने के लिये तैयार रहना। न तो दूसरों की आस्था तोड़ना और न ही अपनी आस्था टूटने देना चाहिये।
- वृद्धों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव, साथियों के प्रति प्रेम व सहयोग तथा छोटों के प्रति स्नेह का भाव रखना।
- अपने सुख या लाभ के लिये दूसरों को कष्ट या हानि न पहुंचाना। झूठ या निन्दा से बचने का पूर्ण प्रयास करते हुये अनुचित तरीके से धन अर्जन से स्वयं को दूर रखना।
- अपनी आय का दसवां हिस्सा समाज कल्याण के लिये देना तथा दैनिक जीवन में रोजाना दो घंटे का समय शुद्ध रूप से सामाजिक कार्य के लिये समर्पित करना।
- विरोधी विचारों पर शांतिभाव से गहराई से विश्लेषण करके उचित निष्कर्ष पर पहुंचना।
- स्वाध्याय एवं भगवद्-चिन्तन के लिये थोड़ा समय निकालना तथा सोने से पहले आत्म-विश्लेषण करना और अपने सम्पूर्ण कर्मों को प्रभु के चरणों में अर्पित करना।

परिवारिक स्तर

- परिवार के सभी सदस्य कम से कम एक समय का भोजन अवश्य साथ करें तथा पन्द्रह दिन में कम से कम एक दिन परिवार के सभी सदस्य साथ बिताएं।
- परिवार में संस्कारमय वातावरण बनाएं। जैसे-बड़ों का पैर छूना, दीया-बाती एवं आरती करना, तुलसी एवं सूर्य भगवान को जल चढ़ाना इत्यादि बातें बच्चों को सिखाना।
- घर की सजावट, संस्कारयुक्त पुस्तकें एवं भजन, सद्गुरुओं की वाणी व प्रवचनों को पेन-ड्राइव, यू-ट्यूब व अन्य माध्यमों से देखना/सुनना व परिवार के सदस्यों को दिखाना जिससे सद्विचार उत्पन्न हों।
- भोजन में पक्षियों एवं गौमाता का हिस्सा निकालना एवं छोटे-छोटे कार्यों से बच्चों में परोपकार की प्रवृति जागृत करना।
- बच्चों में बचत की भावना को प्रोत्साहित करने के लिये उनको गुल्लक देना।
- अपने उपयोग किये हुये अखबारों, कबाड़ एवं अन्य वस्तुओं को बेचने की बजाय परोपकारी कार्यों के लिये दे देना।
- रिश्ते-नाते निभाना एवं उसके दायित्व के प्रति ईमानदारी बरतना।
- सफाई के साथ-साथ पर्यावरण एवं जल संरक्षण पर ध्यान देना।

सामाजिक स्तर

- सार्वजनिक जीवन में शारीरिक श्रम करने वालों को सम्मान देना तथा उचित अनुकरणीय उदाहरणों सामने लाना।
- सफाई, श्रम, सेवा, संयम एवं त्याग के पक्ष में वातावरण बनाना।
- सत्य के समर्थन में समाज को एकत्रित करना एवं इस व्यवस्था के अनुकूल गतिविधियों एवं उपक्रमों को प्रोत्साहन देना।
- सार्वजनिक कार्यों में वैभव-विलास की बजाय मितव्ययिता को प्रदर्शित एवं प्रोत्साहित करना।
- जीवन शुचिता एवं साधन शुचिता को अच्छाई और सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदंड बनाना।
- विवाह-आयोजन एवं मृत्यु-भोज आदि अवसरों पर फिजूलखर्ची से बचना।
- अपने गांव/क्षेत्र के पूजास्थलों पर अन्नशाला, गौशाला, पाठशाला, धर्मशाला तथा आरोग्यशाला स्थापित करना।
- प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल/जलस्रोत, जंगल/वृक्षभूमि, जमीन, जानवर आदि के संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य को आगे बढ़ाना।
- सफाई जैसे कार्यों में सामूहिक श्रमदान के माध्यम से सामाजिक सहभागिता को बढ़ाना।
- नशा उत्पादन एवं नशा बिक्री केंद्रों को अपने क्षेत्र में न पनपने देना तथा पहले से खुले नशा केंद्रों के खिलाफ लोगों के साथ मिलकर जन आंदोलन कर उनको बंद करवाने का प्रयास करना।
- गांव तथा बस्ती में लोक संस्कार तथा लोक शिक्षण की दृष्टि से वाचनालय/पुस्तकालय स्थापित करना तथा अपने गांव या बस्ती की चैपाल को पुनर्जीवित करना।
- कस्बों, शहरों और महानगरों के विद्यालयों व महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को भारतीय मूल्यों, परंपराओं, सभ्यता, संस्कृति, संस्कारों एवं इतिहास के प्रति संवेदनशील एवं जागरूक बनाना।

संस्कृति संज्ञान संस्था इन सभी विषयों को लेकर संपूर्ण समर्पण भाव से पूरे देश में लोगों को जागरूक करने का इरादा रखती है। संस्था का मानना है कि

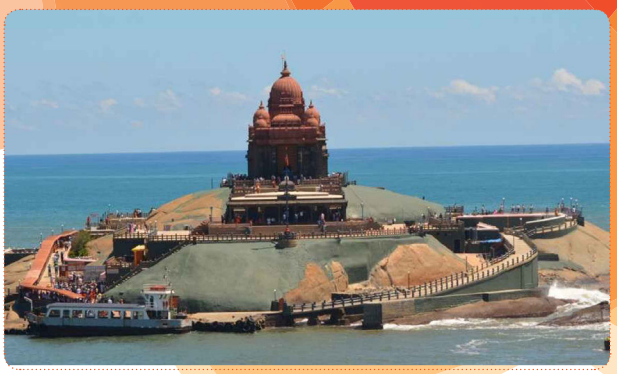

सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिये हमारी बुनियाद मजबूत होनी चाहिये। यह बुनियाद तभी मजबूत होगी, जब हम अपने ऋषियों, मुनियों, मनीषियों, विचारकों, अन्वेषकों, समाज सुधारकों और ग्रंथों द्वारा दिये गये सनातन मूल्यों को अपने दैनिक एवं सामाजिक जीवन में उतारें।

वर्तमान भारत में हमारे चारों तरफ मूल्यों का क्षरण देखा जा सकता है। यह हम सबके लिये और आधुनिक भारत के भविष्य के लिये गंभीर चिंता का विषय है। हमारे मूल्य नहीं बचेंगे तो समाज और परिवार नहीं बचेगा। समाज और परिवार नहीं बचेगा तो भारत वर्ष मजबूत नहीं होगा। ऐसे वातावरण को बदलना आज के समय की जरूरत है। हमारा यही प्रयास है कि नये भारत के निर्माण में हम देश की बुनियाद को मजबूत करें।

कोई भी राष्ट्र हो या व्यक्ति उसके जीवन में मूल्यों का अहम योगदान होता है, क्योंकि इन्हीं मूल्यों के आधार पर विवेक का इस्तेमाल करके सही गलत की परख संभव है। मनुष्य के जीवन की प्रथम पाठशालाा उसका परिवार और समाज होता है। आज के समय में परिवार विघटित हो रहे हैं और समाज मूल्यों से गिरता जा रहा है। हमारा उद्देश्य समाज में अपने सनातन मूल्यों, परंपराओं, संस्कृति और सभ्यता की पुनर्प्रतिष्ठा करके इसे सबल बनाना है।

वैश्वीकरण के इस युग में भौतिकतावाद लोगों के सिर पर चढ़कर बोल रहा है। व्यक्ति व समाज दोनों इसके शिकार हुये हैं। चारों तरफ साम्प्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा, असहिष्णुता और चोरी, डकैती की बढ़ती प्रवृत्ति समाज में मूल्यों के विघटन का ही उदाहरण है। व्यक्ति और समाज धर्म के मौलिक सिद्धांतों से भटक चुके हैं। हमारे खान-पान, रहन-सहन और भाषाशैली में